ISSN : 2582-1792 (P)

IMPACT OF 948 SHF FACTOR

शोध समागम®
A DOUBLE BLIND PEER-REVIEWED QUARTERLY MULTIDISCIPLINARY AND BILINGUAL RESEARCH JOURNAL

आलोचना का लोकतंत्र

(उच्च शिक्षा में शोध, आलोचना के नवाचार)

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार 13,14 फरवरी 2021

मा. श्री रमेश पोखरियाल निशंक, केंद्रीय शिक्षा मंत्री से
प्रो. रामदेव भारद्वाज, कुलपति की भेंट

श्री एन्जा कॉलेज, कैलिफोर्निया
में हिन्दी सीखते ग्लोबल विद्यार्थी

प्रो. नीलू गुप्ता

श्री एन्जा कॉलेज, कैलिफोर्निया
15 वर्षों से हिन्दी का वैश्विक प्रचार

Publisher
ADITI PUBLICATION
Raipur (C.G.) India

Special Issue for Webinar

आयोजक

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,
श्री एंजा कॉलेज, कैलिफोर्निया (अमेरिका),
विश्व हिंदी ज्योति, कैलिफोर्निया और केंद्रीय
हिंदी संस्थान आगरा के संयुक्त तत्वावधान में

&

SHODH SAMAGAM
A double - blind, peer-reviewed, quarterly,
Multidisciplinary and bilingual research journal

मुख्य संपादक - डॉ. शोभा अग्रवाल | विशेषांक संपादक- डॉ. संदीप अवस्थी

अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, डी एंजा कॉलेज कैलिफोर्निया, अमेरिका, विश्व हिन्दी ज्योति, कैलिफोर्निया और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के संयुक्त तत्वावधान में

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार: 13,14 फरवरी 2021, समय 11 से 2 बजे विषय: आलोचना, तर्कणा से समुन्नत शैली विचारविमर्श दर्शनशास्त्र, संस्कृत, समाजशास्त्र, चित्रकला, संगीत आदि के सन्दर्भों में दूसरा दिन 14 फरवरी, रविवार 11 से 12:30 बजे भारतीय समय

तीसरा सत्र

अध्यक्ष

मुख्य वक्ता

विशिष्ट वक्ता

समन्वयक

डॉ. सुनीता अवस्थी

चतुर्थ सत्र/समापन सत्र 14 फरवरी (रविवार, 12:30 से 2 बजे तक)

विषय : आलोचना के नवाचार, नव सीमान्त

अध्यक्ष

मुख्य अतिथि

मुख्य वक्ता

विशिष्ट वक्ता

समन्वयक

मुख्य संयोजक

सह संयोजक

Google meet link

Registration Link

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल नवनिर्मित बिल्डिंग

आयोजन समिति अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार

डॉ. सन्दीप अवस्थी
विशेषांक मुख्य–संयोजक
अध्यक्ष,
भारतीय विद्या अध्ययन केंद्र,
पर्यटन और जनसंचार विभाग,
भारत

प्रोफेसर बीना शर्मा,
विशेषांक संयोजक
निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान,
आगरा

प्रो नीलू गुप्ता,
विशेषांक संयोजक
विद्यालंकार, कैलिफोर्निया (अमेरिका)
डी एंजा कॉलेज, केलिफोर्निया,
हिंदी शिक्षण की क्लास (पन्द्रह वर्षों से)
भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी ज्योति
उपमा ग्लोवल के माध्यम से साहित्य,
और संस्कृति की सेवा हेतु
'प्रवासी भारतीय सम्मान''21,
भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान।

विशेषांक संपादक
डॉ. सन्दीप अवस्थी
अध्यक्ष, भारतीय विद्या अध्ययन केंद्र,
पर्यटन और जनसंचार विभाग, भारत

विशेषांक सह–संपादक
डॉ. प्रिया शर्मा,
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय,
हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

विशेषांक सह–संपादक
डॉ. फरगाना,
सहायक प्रोफेसर एवं वार्डन
उर्दू विभाग,
एपेक्स विश्वविद्यालय,
जयपुर

विशेषांक सह–संपादक
डॉ. लता चन्दोला,
एसोसिएट प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा
विभाग, वेंकुंठी देवी कन्या,
महाविद्यालय, आगरा

विशेषांक सह–संपादक
प्रो. जूही शुक्ल,
एसोसिएट प्रोफेसर
अध्यक्ष चित्रकला
प्रयाग महिला विद्यापीठ
डिग्री कालेज, प्रयागराज

13	भारतीय लोकमन और जीवन मूल्य : प्राचीन से वर्तमान तक डॉ. प्रिया शर्मा, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला	55
14	द्विवेदी जी के औपन्यासिक नारी चरित्रों के विविध आयाम प्रियंका गुप्ता, चौरंगी शोधार्थी, विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर, पश्चिम बंगाल	61
15	लोक, लोक कला, साहित्य और संस्कृति का अनन्त सम्बन्ध डॉ. श्रीमती वीणा चौबे, प्राध्यापक (चित्रकला) शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल	66
16	ओरे मैं : मानवीय संवेदनाओं का दस्तावेज डॉ. स्वाति मिश्रा, जबलपुर	70
17	कबीरा खड़ा बाजार में : व्यक्ति के मानसिक अन्तर्विरोधों का प्रासंगिक दस्तावेज डॉ. सुनीता सियाल, हिन्दी विभागाध्यक्षा सोफिया कन्या महाविद्यालय, अजमेर (राज.)	75
18	समाचार पत्रों में शिक्षा डॉ. लता चन्दोला, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा-1	79
19	मराठी भाषी हिंदी उपन्यासकारों की उपन्यास लेखन परंपरा डॉ. अशोक आनंदराव लाकूडे, हिंदी विभाग प्रमुख मंडणगड महाविद्यालय, मंडणगड, जि. रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	83
20	साहित्य और जीवन मूल्यों का परस्पर संबंध डॉ. प्रज्ञा अनुरागी, सह प्राध्यापक, शा.मा.कु.या. महाविद्यालय, जबलपुर म.प्र.	87
21	व्यंग्यकारिता साहित्य के क्षितिज का सूर्य शरद जोशी रीना सोलंकी, शोधार्थी, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश डॉ. मौसमी परिहार, शोध निर्देशिका, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्यप्रदेश	91
22	हरीश भादानी के काव्य में आंचलिकता रजनी, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज)	95
23	वैश्विक पटल पर हिंदी का विस्तार डॉ. विदुषा सिंह, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्यप्रदेश	96
24	उर्दू काव्य में आलोचना के बदलते आयाम डॉ. फरगाना, शोध गाईड, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं वार्डन, उर्दू विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर ज़हीर अब्बास, शोधार्थी, उर्दू विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर	98
25	उर्दू रिपोर्ताज निगारी में आलोचना 1980 के बाद डॉ. फरगाना, शोध गाईड, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं वार्डन, उर्दू विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर अख्तर अहमद मलिक, शोधार्थी, उर्दू विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर	101
26	उर्दू साहित्य में आलोचना 1980 के बाद डॉ. फरगाना, शोध गाईड, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं वार्डन, उर्दू विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर मुदस्सर अहमद भगत, शोधार्थी, उर्दू विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर	103
27	उर्दू उपन्यासों में आलोचना 1980 के बाद डॉ. फरगाना, शोध गाईड, असिस्टेंट प्रोफेसर एवं वार्डन, उर्दू विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर	105

भारतीय वाङ्मय और जीवन मूल्य : प्राचीन से वर्तमान तक

डॉ. प्रिया शर्मा,
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

संस्कृत मे प्रणीत हमारा संपूर्ण वाङ्मय वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता आदि के रूप में विद्यमान है। ये ग्रंथ हमारी भव्य संस्कृति की आधारशिला है। साहित्यिक दृष्टि से वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, रामचरितमानस, गीता, बाईबिल, कुरान तथा गुरु ग्रंथ साहिब आदि बहुमूल्य ग्रंथ भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। 'मूल्य' शब्द का अर्थ सामान्यतः वस्तु के दाम या कीमत से है। यहां 'मूल्य' शब्द का अर्थ मानव मूल्यों तथा जीवन मूल्यों से संबंधित है। मनुष्य अपने लिए सुंदर संसार की कल्पना करता है जहां वह शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सके। जब वह संसार के मायाजाल की मोह-मरीचिका में उलझ जाता है तो उसे उचित-अनुचित के भेद की जानकारी नहीं रहती। भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मनुष्य की मानसिक, शारीरिक और आर्थिक भूख में वृद्धि होती रहती है। समाज की संरचना, संगठन और उसके पूरे ढांचे का आधार मानव है। सुचारु एवं सुव्यवस्थित जीवन के लिए शरीर की सुरक्षा, शिक्षा तथा कर्तव्यों का ज्ञान अनिवार्य है। समाज की पृष्ठभूमि पर ही सार्वभौम प्रेम एवं श्रद्धा की आधारशिला रखी जा सकती है। आत्मत्याग और प्रेम की चरमावस्था ही व्यक्ति को सकाम कर्म से निष्काम कर्म की ओर ले जाती है।[1] भारतीय धर्मशास्त्रों में धर्म के साथ आचरण के महत्व को भी स्वीकार किया गया है। आचरण ही धर्म का व्यावहारिक रूप है। धर्मशास्त्रों में वेदों को धर्म का मूल और वेदविहित कर्म (आचरण) को धर्म माना गया है – वेदोऽखिलो धर्म मूल।[2] आचरण को परम धर्म स्वीकार किया गया है – आचार परमोधर्मः।[3] संस्कृति की विरासत सौंपी जाती है अपनी परंपराओं से। सत्य, अहिंसा, करुणा और प्रेम को धर्म का सनातन एवं चिरंतन रूप कह सकते हैं। वैदिक काल में परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ किए जाते थे। ब्राह्मण युग में यज्ञ को परमात्मा से ऐश्वर्य मांगने की प्रार्थना के रूप में घसीट कर धरती पर सबसे महान शक्ति के रूप में बदल दिया गया।[4] जीवन मूल्यों में ही मानव जीवन को संस्कारित और परिष्कृत करने वाली सम्यक क्रिया है। भारतीय संस्कृति जीवन के हर पल के आचार-विचार-व्यवहार को आदर्श रूप देती है और यह क्षमता संस्कृति के नियामक आंतरिक तत्वों में विद्यमान है। सत्य विश्व के सभी धर्मों को मान्य है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सत्य का अर्थ परमसत्ता के अस्तित्व को माना है, 'सत्य का अर्थ ही है' है। परंपरा-क्रम से जिस सच्चिदानंद को सुना गया है, उसके तीन तत्व हैं – सत्, चित्, आनंद। उसकी सत्ता त्रिकाल में है, इसलिए वह सत् है।[5] वेदों में भी सत्य को ही पृथ्वी का आधार माना गया है – सत्येनोत्तभिता भूमिः।[6] अहिंसा का सिद्धांत निःसंदेह कृषि के लिए पशुओं की रक्षा करने और उनके बलात् अपहरण को रोकने की पार्थिव इच्छा का आदर्शीकरण था।[7] करुणा अहिंसा का मूल स्त्रोत है। करुणा किसी असमर्थ, असहाय, दुःख अथवा संकट में पड़े हुए व्यक्ति को देखकर मन में होने वाली, उसके दुःख की ऐसी अनुभूति है, जो उसका दुःख दूर करने की प्रेरणा देती है।[8] मनुष्य को सदैव विवेक की दृष्टि रखनी चाहिए और जहां कहीं भी गुण मिल सकें, उन्हें ग्रहण करना चाहिए। संसार में न तो कभी पूर्ण दोषहीन गुण की स्थिति रही है और न समान गुण-हीन अवगुण की। इसलिए स्वामी गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-

जड़ चेतन गुण-दोषमय, विश्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार।।[9]

इन उत्कृष्ट मूल्यों का पालन करते हुए ही आज विविध संदर्भों में भारतवर्ष की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बन चुकी है। धर्म भारतीय वाङ्मय का प्रमुख अंग है। धर्म के बिना किसी वस्तु का वस्तुत्व स्थिर नहीं रह सकता। वैदिक काल से ही भारतीय हृदय भावनाओं के संस्कार से भावुक एवं उदार रहा है। सभी के लिए मंगल कामना की प्रार्थना करना हमारी संस्कृति का परम कर्तव्य है – 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः' वैदिक जीवन के मूल्य रहे हैं। मनुष्यों की विशिष्टता दिखाने वाली यदि कोई वस्तु है तो वह धर्म है।[10] मनीषी महतो ने धर्म को कर्म